
मनसा सेवा - 86

अव्यक्त बापदादा :- (15/12/2001)

» _ » वाणी की सेवा में बहुत समय दिया, समय सफल किया, सन्देश दिया। आत्माओं को सम्बन्ध सम्पर्क में लाया, ड्रामानुसार अब तक जो किया वह बहुत अच्छा किया। लेकिन अभी वाणी के साथ साथ मन्सा सेवा की ज्यादा आवश्यकता है। और यह मनसा सेवा हर एक नया, पुराना, महारथी, घोड़ेसवार, प्यादा सब कर सकते हैं।

» _ » इसमें बड़े करेंगे, हम तो छोटे हैं, हम तो बीमार हैं, हम तो साधनों वाले नहीं है. कोई भी आधार नहीं चाहिए। यह छोटेछोटे बच्चे भी कर सकते हैं। बच्चे मनसा सेवा कर सकते हैं ना? (हाँ जी) इसलिए अभी वाचा और मनसा सेवा का बैलेन्स रखी। मनसा सेवा से आप करने वालों को भी बहुत फायदा है।

»» बहाने क्यों बनाते हैं?

» _ » अज्ञात सा भय

→ अपनी इज्जत बचाने का

» _ » असुरक्षा का भाव

» _ » अपने पर विश्वास कम है...

» _ » स्वमान की कमी, हीन भावना

» _ » आलस्य

» _ » कुछ कमी, कमजोरी छिपाना चाहते हैं...

» _ » क्षमता की कमी

» _ » इच्छा ही नहीं है...

» _ » स्वार्थ, अहंकार की पूर्ति के लिए...

» _ » झूठ बोलने की आदत

» _ » पुन्य कर्म करने से मिली निराशा...

→ क्योंकि पुन्य के मार्ग पर चलने वाले को बहुत सहन करना पड़ता है...

»» 3 प्रकार के बहाने

» _ » शारीरिक बहाने

→ शरीर साथ नहीं दे रहा... बीमारी

→ बुढ़ापा, अब हमसे पुरुषार्थ नहीं होता...

→ कमजोरी

→ थकान

» _ » मानसिक बहाने

→ सेवा बहुत है...

→ टाइम नहीं मिलता...

→ हमारी बुद्धि कम है...

→ पहले किया नहीं...

→ अनुभव नहीं...

→ झंझट है...

→ हमारा चिन्तन नहीं चलता...

→ हमारा रूटीन खराब हो जायेगा...

■ दिनचर्या में बदलाव नहीं चाहते...

→ मूड नहीं है...

→ क्यों टाइम वेस्ट करे...

» _ » आध्यात्मिक बहाने

→ ड्रामा

→ पार्ट ही ऐसा है...

→ सेवा साथी ऐसा है...

→ संस्कार कड़े हैं इसके...

→ ये भोजन मुझे सूट नहीं होता...

➤➤ ज्ञान, योग, धारणा, सेवा के तल पर बहाने

» _ » ज्ञान के तल पर बहाने

→ हमें याद नहीं रहता...

→ बुद्धि कमजोर है...

→ ये पहले से होशियार है...

→ हमें मनन करना, लिखना नहीं आता...

→ इतनी किताबें हो गयीं, अब क्या बाकी रह गया...

→ सब कुछ बाबा ने बता दिया... अब क्या चिन्तन करे...

→ बाबा ने तो सहज राजयोग बताया है... इतना विस्तार क्यों करे...

» _ » योग के तल पर बहाने

→ बैठ कर क्या योग करे... हमारा तो चलते फिरते योग है...

→ बाबा ने हठ योग थोड़े ही बोला है... ये तो सहज राजयोग है...

→ रात को लेट सोये, इसलिए लेट उठे

» _ » धारणा के तल पर बहाने

→ दिनचर्या में बहाने

→ दिव्य गुणों की धारणा हमसे होती नहीं...

→ इतना ही होता है...

→ हमारे संस्कार ही ऐसे हैं...

→ इनके संस्कार ऐसे हैं...

➡_ ➡ सेवा के तल पर बहाने

→ शरीर साथ नहीं देता...

→ सब हम ही करेंगे क्या...

→ ज्ञान योग कब करेंगे... सेवा ही करते रहेंगे क्या...

■ जब कर्तव्य पुकारे तो उससे बढ़कर कुछ भी नहीं है...

➤➤ बहाने बनाने में व्यक्ति इन्वेंशन करता है...

➡_ ➡ बार बार बहाने बनाता है तो फिर उसके लिए सोचना नहीं पड़ता...
